2 पतरस

पतरस प्रेरित द्वारा लिखा गया पहला पत्र

लेखकः

पतरस जो प्रीभु यीशु मसीह के आरम्भिक प्रेरितों में से एक था।

समयः

लगभग 68 ईस्वी में।

विषयः

पतरस यह जानता था कि उसकी मौत पास आ चुकी है (1:13-15)। उसके लिखने का उद्देश्य यह था कि जो बातें विश्वासियों ने सीखीं थीं उन्हें याद रखें। वह उन्हें हिम्मत भी दिलाता चाहता था (1:13; 3:1)। वह उन्हें झूठे शिक्षकों के बारे में भी चेतावनी देता है। वह उन्हें प्रभु यीशु के ज्ञान और अनुग्रह में बढ़ने के लिए भी कहता है (3:18)। इस पत्र में शब्द 'ज्ञान' मुख्य है और लगभग सात बार आया है। 'जानो', 'जानना' या 'जाना' आदि शब्द लगभग साथ बार आए हैं। 'अज्ञानता' शब्द तीन बार आया है। यह सभी मसीह जीवन में सच्चे ज्ञान के बड़े महत्व के बारे में पतरस के अटूट विश्वास को दिखाता है।

1 शमौन पतरस की ओर से जो यीशु
मसीह द्वारा भेजा गया प्रेरित और
सेवक है, उन लोगों के नाम जिन्होंने हमारे
परमेश्वर और मुक्तिदाता यीशु मसीह की
विश्वासयोग्यता के द्वारा हमारे समान कीमती
विश्वास हासिल किया है।

2परमेश्वर और यीशु मसीह को जानने से
तुम में अपरम्पार कृपा और शान्ति बढ़ती
जाए। 3परमेश्वरीय सामर्थ ने हमें वह
सब दिया है, जिसकी हमें जीवन में और
पवित्रता (खरे जीवन) के लिए ज़रूरत है।
यह हमें उन्हीं के ज्ञान के द्वारा दिया गया है,
जिन्होंने हमें अपनी महिमा और भले गुणों
के लिए बुलाया है। 4ताकि तुम्हें दी गयी
इन बड़ी और कीमती प्रतिज्ञाओंके द्वारा
बुरी इच्छाओं के कारण इस संसार में पाई
जाने वाली सड़ाहट से बचकर परमेश्वरीय
स्वभाव के हिस्सेदार हो जाओ।

5इसी के साथ कोशिश कर के तुम
विश्वास में अच्छा चाल-चलन और अच्छे

1:1 1 पतर. 1:1.

"शमौन"- मत्ती 4:18; 10:2.

"सेवक"- रोमि. 1:11 पतरस यीशु मसीह को अपना "याहवे और मुक्तिदाता" कहता है। यीशु के सृष्टिकर्ता होने के सम्बन्ध में देखें। तीतुस 2:13; फ़िलि. 2:6; इब्रा. 1:3,8,10; यूहन्ना 20:24 आदि।

"कीमती"- विश्वास सच में बहुत कीमती होता है (1 पतर. 1:7)। जिनके पास यह है, उन्हों ने इसे प्राप्त किया है। दूसरे शब्दों में मसीह में विश्वास परमेश्वर का इनाम है (प्रे.काम 3:16; इफ़ि. 2:8; फ़िलि. 1:29)।

"कीमती विश्वास"- रोमि. 3:20-26.

1:2 रोमि. 1:7 1 पतर. 1:2 देखें कि असीम दया और शक्ति किस तरह विश्वासियों में बहती है। तुलना करें यूहन्ना 17:3 हम जितना अधिक पिता और पुत्र को जानेंगे, उतनी ही हमारी शक्ति बढ़ेगी और हम उतना ही अधिक उनकी असीम कृपा की नड़ाई करेंगे। याहवे यह चाहते हैं कि हम उन्हें अधिक जानें, ऐसा होने पर हम उनकी असीम दया को अधिक ग्रहण करेंगे और इस्तेमाल करेंगे देखें 3:18. पौलुस सदा यह प्रार्थना करता था कि विश्वासी पिता को बेहतर जानें - इफ़ि. 1:17; 3:19; 4:13; फ़िलि. 1:9-10; कुल. 1:9-12; 1:3 उनकी अलौकिक शक्ति यीशु मसीह की ओर इशारा है। उनके पास यह सामर्थ है क्योंकि वह सृष्टिकर्ता है। एक खरा जीवन जीने के लिये उन्हों ने हमें वह सब कुछ दिया है, जिसकी हमें आवश्यकता है। तुलना करें इफ़ि. 1:3 ज्ञान शक्ति और शुद्ध जीवन जीने के लिए बल उन्हीं से मिलता है और वही सब विश्वासियों में हैं (रोमि. 8:9-10; 2 कुरि. 13:5; कुल. 1:27; 2:3)।

1:3 "खरे जीवन"- 1 तीमु. 2:2; 3:16; 4:8; 6:5-6,11; तीतुस 1:1

"महिमा"- यूहन्ना 1:14; 17:5.

"भले गुणों"- यूनानी भाषा में 1 पतर. 2:9 है स्तुति इसका अर्थ है उत्तम गुण, स्तुति के योग्य। सृजनहार याहवे का चरित्र प्रशंसा के लायक हैं। निर्ग. 33:19; नहे. 9:25; भजन 17:13; 31:19; 145:7; 1 पतर. 2:3.

"बुलाया है"- 1 पतर. 1:15; 2:9,21; 3:9; 5:10 (रोमि. 1:6; 8:30 में नोट्स देखें)।

1:4 "बड़ी और कीमती प्रतिज्ञाओं"- मसीह यीशु के विश्वासी परमेश्वर नहीं बन जाते हैं। किसी भी व्यक्ति के लिए यह बिल्कुल असंभव है। किन्तु विश्वासी मसीह से जुड़े हुए है। वे पिता में है और पिता उन में यूहन्ना 14:17; 17:20-23 इस तरह से वे दैवीय स्वभाव रखते हैं।

"बुरी इच्छाओं"- संसार के सारे भ्रष्टाचार की जड़ मनुष्य का मन है। याकूब 1:14-15; 4:1-2 हम सभी को 1 पतर. 1:14; और 1 पतर. 2:11 में पतरस के प्रोत्साहन के शब्द सुनने चाहिए। सृजनहार की बड़ी और बहुमूल्य प्रतिज्ञाएँ भ्रष्टाचार से पूरी तरह से बचने के लिए हैं।

"सड़ाहट से बचकर"- यदि हम इस दुनिया के भ्रष्टाचार से नहीं बचते, स्वर्गिक पिता के क्रोध प्रगट होने पर उस से बच भी नहीं सकते (मत्ती 23:33; रोमि. 2:3; 1 थिस्स. 5:3; 2 तीमु. 2:26; इब्रा. 2:3; 12:25)। हम मात्र पिता की प्रतिज्ञाओं पर भरोसा करने से बच सकते हैं। देखें उत्पत्ति 6:11-12; भजन 14:3; यशा. 1:4; प्रे.काम 2:40; इफ़ि. 4:22.

1:5-7 इसलिए कि मसीह ने हमें वह सब कुछ दे दिया है, जिसकी हमें ज़रूरत है, हमें वह सब पकड़े रहना चाहिए और उत्तम जीवन के अच्छे गुणों में बढ़ना चाहिए।

"विश्वास"- यहीं हम सब को आरम्भ करना

चाल-चलन में समझ, 6और समझ पर संयम, संयम पर धीरज, धीरज पर भक्ति, 7भक्ति पर भाईचारे का प्रेम बढ़ाते रहो 8अगर ये बातें तुम में बने रहने के साथ-साथ ज़्यादा बढ़ती जाएँ, तब तुम यीशु मसीह को पहचानने में बेकार और बेअसर नहीं होंगी। 9लेकिन जिस इन्सान में ये बातें नहीं हैं, वह धुँधला देखने वाला और अन्धा है और दूर की बातों को नहीं देख सकता। वह आने वाली बातों को समझ नहीं सकता और यह भी भूल चुका है कि उसके पुराने गुनाह माफ़ हो चुके हैं।

10इसलिए भाइयो-बहनो अपनी बुलाहट और चुने जाने को निश्चित करने की कोशिश करो, क्योंकि अगर तुम ये सब बातें करते रहोगे तो कभी भी गिरोगे नहीं। 11यही

चाहिए इसके बिना हम सच्चे शिष्य नहीं और स्थायी रीति से कोई लाभ नहीं इब्रा. 11:6; यूहन्ना 3:36.

"चाल-चलन"- पद 3. यूनानी शब्द उत्तम चरित्र को दिखाता है।

"समझ"- पद 2 इसे भी हमेशा के लिए एक बार नहीं प्राप्त करते हैं। इसके विकास की ज़रूरत है - 3:18; फ़िलि. 3:10 - हम सभी इसकी शुरूआत कर सकते हैं।

1:6 "संयम"- यह स्वर्गिक पिता के आत्मा का फल है (गल. 5:23) पवित्र आत्मा को समर्पण करने और आत्मा में चलने और अपने विचारों और इच्छाओं को वश में लाने के लिए पवित्र आत्मा को समर्पण और आत्मा में जीवन जीने के लिए हम इसे जोड़ते हैं।

"धीरज"- इसका अर्थ है किसी भी प्रकार की समस्या और परख में से होकर जाना, किन्तु विश्वास में बने रहना। स्वभाव से यह हमारे पास नहीं हैं। हमें जीवन में "जोड़ना" सीखना है (याकूब 1:2-4,12)।

"पवित्रता"- पद 3; 3:11 अपने स्वर्गिक पिता के लिए प्रेम को कार्य रूप देता है।

1:7 "भाईचारे का प्रेम"- रोमि. 12:10; 1 थिस्स. 4:9; इब्रा. 13:1; 1 पतर. 1:22. यह साथी विश्वासियों का वह प्रेम है जो कोमल है और कामों में दिखता है। वह प्रभु का प्रेम जो पिता विश्वासियों के मन में डालते हैं

"बढ़ाते रहो"- इसका अर्थ यह नहीं कि एक-एक गुण को बारी-बारी बढ़ना है बल्कि यह कि एक साथ सभी गुण बढ़ने चाहिए। यह कैसे हो सकता है? विश्वास से प्रतिज्ञाओं को पकड़े रहने से, स्वयं की परीक्षा करने से पिता के साथ सहभागिता करने और वचन को लागू करने से मसीह और नए स्वभाव को पहनने से (भजन 1:1-3; लूका 11:28; रोमि. 13:14; 2 कुरि. 5:7; इफ़ि. 4:22-24)।

1:8 "बढ़ाती जाएँ"- 3:18; गल. 5:22-23; इफ़ि. 4:12-15; फ़िलि. 3:12-14.

"बेकार और बेअसर"- अपनी शिष्यता के जीवन में हम बेकार और फलहीन नहीं होना माँगते हैं, लेकिन हम फलवन्त होंगे यदि अपने जीवन में ऊपर बताए गुणों को जोड़ते जाएंगे।

1:9 "अन्धा..."- कुछ आत्मिक सच्चाइयों और अद्‌भुत बातों को वह देख सकता था यदि उसकी आँखें खुली होतीं। पौलुस की प्रार्थना इफ़ि. 1:18-19 में देखें। जो लोग दूर तक नहीं देख सकते, वे पूरी रीति से अन्धे नहीं हैं। वे इस संसार की बातों को देख सकते हैं वह सब जो उनके चारों ओर है, किन्तु उन्हें पौलुस जैसी समझ नहीं है, जिसके बारे में वह 2 कुरि. 4:18 में कहता है।

"भूल चुका है"- गुनाह में चलना क्या है, यदि उसे यह मालूम था, यह भी कि उसे पिता ने ऊँची और पवित्र बुलाहट से बुलाया है तो वह अच्छे गुणों को जोड़ता जाएगा पद 5-7

1:10 "अपनी...जाने"- पतरस का मतलब था, मुक्ति के लिए चुनना और बुलाना। याहवे ने अपना मत देकर उन्हें सृष्टि के पहले से चुना इफ़ि. 1:4; 1 पतर. 1:2; यूहन्ना 6:37; रोमि. 1:6; 8:28-30; इफ़ि. 1:4-6 के नोट्स देखें। हम कैसे जाने की स्वर्गिक पिता ने हमें चुना है, बुलाया है। एक तरीका है, वह है गुणों को जोड़ते जाना पद 5-7. यदि हम ऐसा नहीं करते तो सवाल यह है कि हम मुक्ति के बारे में कुछ जानते हैं या नहीं।

"गिरोगे"- उन गुणों को जोड़ने से हम निश्चित हो जाते हैं, कि हमें चुना गया है। हमारा भरोसा भी बढ़ता है और अकेले स्थिर रहने के लिए बल भी मिलता है।

एक तरीका है जिससे तुम्हें मुक्तिदाता यीशु मसीह के अनन्त राज्य में शान से दाखिला मिलेगा।

12हालांकि तुम्हें और दूसरों को यह सच्चाई ठीक से सिखायी गयी है, फिर भी मैं इन बातों को याद दिलाने में कोई लापरवाही नहीं बरतना चाहता हूँ। 13जब-तक मैं इस दुनिया में हूँ तब-तक तुम्हें याद दिलाकर जोश दिलाना चाहता हूँ और यह सही भी है। 14जैसा प्रभु यीशु ने मुझे दिखाया है, और मुझे पता है, कि इस दुनिया से मेरे चले जाने का समय नज़दीक आ गया है। 15इसके साथ ही साथ मैं यह चाहूँगा, कि मेरी यहाँ की ज़िन्दगी खत्म होने के बाद भी तुम इन बातों को याद करते रहो।

16जब हम ने तुम्हें परमेश्वर यीशु मसीह की सामर्थ और उनके आने की बात बतलाई, तो यह चालाकी से बनायी हुयी झूठी कहानी नहीं थी, लेकिन हम तो उनकी महिमा (तेज) के चश्मदीद गवाह थे। 17क्योंकि जब ये आसमानी आवाज़ सुनी गयी थी कि "यह मेरा प्यारा बेटा है, जिससे मैं बहुत ज़्यादा खुश हूँ", तो इस से यीशु ने परमेश्वर पिता से आदर और बड़ा नाम पाया था। 18हम ने यह आवाज़ पवित्र पहाड़ से सुनी थी, जब हम उस पहाड़ पर उनके साथ थे।

19यह भविष्यवाणी ऐसी है जैसे कि

1:11 "अनन्त राज्य"- मत्ती 4:17; 5:3,10; 6:10,33; 7:21; 25:34; 1 थिस्स. 2:12; 2 तीमु. 4:1,18; इब्रा. 12:28. जिन लोगों ने पद 5-7 के गुणों को जोड़ा है उन्हें मसीह के राज्य में बड़ा सन्मानित प्रवेश मिलेगा। जो लोग ऐसा नहीं करेंगे, उन्हें अपमानित होना पड़ेगा। तुलना करें मत्ती 5:19; 2 कुरि. 5:10; प्रका. 22:12.

1:12 "सिखायी गयी"- कुल. 1:23; लूका 21:19; 1 कुरि. 16:13; 2 कुरि. 1:21,24.

"याद दिलाने"- रोमि. 15:15; 1 कुरि. 15:1; 2 तीमु. 1:6; 2:14; परमेश्वर ने जो बातें सिखायी हैं उन्हें याद रखने की ज़रूरत है। भूलना संभव है। इसके बुरे परिणाम होंगे देखें व्यव. 8:1-5.

1:13 "दुनिया"- 2 कुरि. 5:1,4.

1:14 दूसरे शब्दों में पतरस जल्दी ही मरने वाला था यूहन्ना 21:18-19 देखें। 2 तीमु. 4:6 की तुलना करें। अपने जीवन काल में पतरस यीशु मसीह के आने की आशा नहीं कर रहा था।

1:15 "चाहूँगा"- वह शायद इस कोशिश में था, कि उन बातों के बारे में और लिखेगा और भेजेगा।

1:16 "चालाकी से बनायी हुयी झूठी कहानी"- 2:3; 1 तीमु. 1:14; 4:7.

"हम"- वह और दूसरे प्रेरित। यीशु की सेवाकाल में वे उसके साथ थे और उन्हों ने अनेक बार अलौकिक शक्ति को देखा था।

"उनकी महिमा (तेज)"- यूहन्ना 1:14 यहाँ पतरस एक निश्चित घटना की बात कर रहा होगा - जब पहाड़ पर यीशु बदल गए थे। देखे मत्ती 17:1-2.

"गवाह"- यूहन्ना 15:27; प्रे.काम 1:3.

1:17 देखें मत्ती 17:5 आवाज़ परमेश्वर निवास (स्वर्ग) से आयी थी।

1:18 मत्ती 17:6 पतरस सुनी सुनायी बात नहीं कह रहा था। वहाँ पर वह खुद था। उसने यीशु का रूप बदलते देखा था। उसने स्वर्ग से आवाज़ सुनी थी। यह एक खास कारण था जिसकी वजह से प्रेरितों की गवाही बहुत असरदार थी। तुलना करें प्रे.काम 1:8; 2:32 आदि।

"पवित्र"- इसलिए परमेश्वर ने उस पहाड़ को इस घटना के लिए चुना, उसे पवित्र (दूसरों से अलग) कहा गया।

1:19 "भविष्यवाणी"- इसका मतलब है ओल्ड टेस्टामेन्ट के भविष्यद्वक्ताओं की किताबें। उत्पत्ति 20:7. वे भी यीशु की महानता और आने के बारे में कहा करते थे (पद 16; भजन 2:8-9; 96:13; 98:9; यशा. 2:12-19; 13:9-11; 26:21; 62:11; 63:1-6; दानि. 7:13-14; जकर्याह 14:3-5)। पहाड़ पर यीशु का बदलना उन भविष्यवाणियों की पुष्टि करता है। साथ ही विश्वासी और ज्यादा कायल हो गए कि वे पूरी होंगी। भविष्यद्वक्ताओं की शिक्षा एक तरह से रोशनी है जो विश्वासियों को दी गयी है (भजन 119:105; नीति. 6:23 से तुलना करें) यह दिखाती है कि हम कहाँ हैं और किधर जा रहे हैं। हम बिना लड़खड़ाए और डगमगाए आगे बढ़ते जा सकते हैं।

अँधेरे में रोशनी का चमकना, जब तक यीशु मसीह लौटते नहीं और उनकी तेज़ रोशनी हमारे दिलों में नहीं चमकती। 20इन सब से बढ़कर जान लो, कि बाइबल में पायी जाने वाली कोई भी भविष्यद्वाणी भविष्यद्वक्ता की अपनी सोच नहीं है। 21क्योंकि बीतें दिनों में कोई भी भविष्यद्वाणी इन्सान की इच्छा से नहीं हुयी, लेकिन भक्त (परमेश्वर के लिए अलग किये गए लोग) पवित्र आत्मा के उभारे जाने के बाद बोला करते थे।

2 जैसे उनके बीच में झूठे भविष्यद्वक्ता थे, वैसे ही तुम्हारे बीच में भी झूठे शिक्षक होंगे, जो बड़ी चालाकी से पाखंड की बातें पेश करने के साथ-साथ उस परमेश्वर का इन्कार करेंगे जिन्होंने विश्वासियों को मोल लिया है। इस कारणवश वे अपने ऊपर

"अँधेरे में"- भजन 82:5; नीति. 4:19; यूहन्ना 1:5; 3:19; रोमि. 1:21; इफ़ि. 4:18; 6:12; 1 यूहन्ना 2:11.

"रोशनी का चमकना"- इसका मतलब है यीशु का दोबारा आना। तब इस धरती के गुनाह की रात समाप्त हो जाएगी - रोमि. 13:12; यशा. 60:1-3.

"तेज़ रोशनी"- प्रका. 22:16 इस पद में पतरस यह जोर डाल रहा है कि पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं को पढ़ें और ध्यान से देखें कि वे क्या कहते हैं।

1:20 "बाइबल"- यहाँ पुराने नियम की तरफ़ इशारा है। भविष्यद्वक्ताओं ने जो देखा उसका मतलब खुद ही नहीं बता दिया। हम भी उसका सही अर्थ नहीं लगा सकते हैं। झूठे भविष्यद्वक्ता इसके बिलकुल उल्टे होते हैं। वे अपने मन और कल्पना से भविष्य के बारे में कहते हैं और उसका अर्थ बताते हैं - यिर्म. 14:14; 23:16; यहेज. 13:3 बाईबल की भविष्यद्वाणियाँ प्रभु परमेश्वर से हैं और वही उसका मतलब बता सकते हैं।

1:21 "इच्छा"- उसका संकेत उन भविष्यवाणियों की ओर है जो परमेश्वर के भविष्यद्वक्ताओं ने स्वयं नहीं कहीं थीं। तुलना करें कि यिर्म. 1:9. वे सच्चाई से कह सके, "परमेश्वर का कहना है" या "प्रभु की सुनो" (यशा. 1:2,10,11; यिर्म. 2:4; यहेज. 3:16-17)। वे लोग प्रभु के निर्देष में कहा करते थे। देखें मत्ती 4:4; 5:17-18; मरकुस 12:4-6; यूहन्ना 10:35; प्रे.काम 4:25; 1 कुरि. 2:13; 2 तीमु. 3:16; इब्रा. 1:5-13; 1 पतर. 1:11 यदि हम बाईबल की कीमत नहीं समझ रहे हैं तो जीवित परमेश्वर को तुच्छ समझ रहे हैं। यदि हम भविष्यद्वाणी से अनजान हैं, तो उन बातों से भी जो प्रभु इस पृथ्वी पर करने वाले हैं और दूसरी बहुत सच्चाइयाँ जिन्हें हमें जानने की ज़रूरत है।

2:1 झूठे भविष्यद्वक्ता - व्यव. 13:1-5; 18:20-22; 1 राजा 18:19-40; 22:6-7; यशा. 9:15; यिर्म. 2:8; 5:31; 14:14; 28:1-9; यहेज. 13:2-7.

"तुम्हारे बीच में"- मत्ती 7:15; 24:11; प्रे. काम 20:29-30; रोमि. 16:17-18; गल. 1:7; फ़िलि. 3:18; 1 तीमु. 4:1-2; 2 तीमु. 4:3; याकूब 4:11 शैतान ऐसे तरीके को छोड़ नहीं देगा जो शताब्दियों से अच्छा साबित हुआ है। इस धरती पर वह स्वयं पहला झूठा भविष्यद्वक्ता था। देखें उत्पत्ति 3:4; यूहन्ना 8:44.

"चालाकी से"- 2 कुरि. 11:13-15; गल. 2:4; न्यायियों 4:1 बहुत चालाकी से मसीही लोगों का पहले विश्वास जीतते हैं। बाद में गलत शिक्षा का परिचय कराते हैं। वे सच्चाई के साथ 'झूठ' को ऐसा मिला देते हैं, कि वह सच्चाई ही लगती है। उन में से ज्यादा लोग रखवाले, शिक्षक और बिशप हैं जो अलग डिनॉमिनेशन के हैं।

"इन्कार"- मत्ती 20:28; 1 कुरि. 7:23; गल. 3:13; प्रका. 5:9 यीशु ने दूसरे लोगों के लिए अपने आपको दे दिया, "एक कीमत के रूप में" - झूठे शिक्षकों के लिए भी कीमत चुकायी। देखें 1 तीमु. 2:6. यीशु ने काफ़ी कीमत दी ताकि हर एक पश्चाताप करे और भरोसा करे। झूठे शिक्षक यीशु मसीह का इन्कार करते हैं। वे यीशु के परमेश्वरत्व या बलिदान को मानने के लिए तैयार नहीं हैं। वे फिर भी अपने आप को मसीही कहेंगे। उनका इन्कार किया जाना बहुत छुपा और खतरनाक हो सकता है (तुलना करें रोमि. 16:18)।

"अपने ऊपर"- फ़िलि. 3:19 झूठे शिक्षक बर्बादी को लाते हैं। वे परमेश्वर को प्रेरित करते हैं कि वह उन्हें बर्बाद कर डाले। उनका व्यवहार दिखाता है कि न्याय उन पर आएगा। जो कुछ होगा, वे पूरी तरह से उसके ज़िम्मेदार होंगे।

बहुत जल्दी बर्बादी को लाएँगे। 2बहुत से लोग उन की नुकसान पहुँचाने वाले चालचलन को अपना लेंगे और उनकी वजह से सच्चाई के रास्ते की बदनामी की जाएगी। 3अपने फ़ायदे के लिए वे अपनी बनाई हुयी शिक्षा से तुम्हें अपने व्यापार का साधन बनाएँगे। उनकी सज़ा बहुत पहले ठहरा दी गयी थी और यह उन्हें बहुत जल्दी मिल भी जाएगी।

4क्योंकि अगर परमेश्वर पिता ने अपने खिलाफ़ बलवा करने वाले स्वर्गदूतों को नहीं छोड़ा, बल्कि नरक में डालकर अन्धेरे की जंजीरों से बान्ध दिया, ताकि वे आखिरी फ़ैसले तक वहीं रहें। 5और धार्मिकता के संदेशवाहक नूह और सात लोगों को छोड़कर, बलवा करने वाली पीढ़ी को जल-प्रलय से नाश करके उस पुरानी दुनिया को भी नहीं छोड़ा। 6अगर उन्हों ने सदोम-अमोरा का नामों-निशां मिटा कर राख बना दिया ताकि भविष्य में बुरा करने वालों के लिये एक नमूना छोड़ दें। 7तथा धर्मी लूत को छुड़ा लिया, जो गंदा जीवन जीने वालों की वजह से बहुत परेशान था। 8वह उनके बीच में रहते हुए जो कुछ

"बर्बादी"- गलत शिक्षाएँ लोगों और पूरी मण्डलियों को बर्बाद कर डालती हैं। धार्मिक झूठ बहुत खतरनाक होते हैं। शैतान के पहले झूठ ही ने इन्सान को बर्बादी में ढकेल दिया था। उसके मानने वाले बहुत से लोगों को बर्बाद करते हैं।

2:2 बहुत से लोग...अपना लेंगे - मत्ती 24:11; फ़िलि. 3:18.

"सच्चाई के रास्ते की बदनामी"- जो लोग दावा करते हैं कि मसीह के रास्ते में हैं, जब कि ऐसा नहीं है, वे दूसरे लोगों को इस निष्कर्ष में पहुचाते हैं कि मसीह का रास्ता सही नहीं है।

2:3 "फ़ायदे"- पद 15; रोमि. 16:18; फ़िलि. 3:19; 1 तीमु. 6:5; उनके धार्मिक काम दूसरों के लिए नहीं लेकिन उनके अपने लिए हैं।

"बनाई हुयी शिक्षा"- 1 तीमु. 4:1-2,7; 6:20-21; 2 तीमु. 4:3-4; बाईबल की साफ़ शिक्षा ऐसे लोगों को पसंद नहीं है इसलिए अपनी बना लेते हैं।

"व्यापार का साधन"- वे परमेश्वर के लोगों की परवाह नहीं करते हैं। यहूदा की तरह वे पैसे के लिए किसी को भी बेच सकते हैं।

"सज़ा"- परमेश्वर ने उन्हें दोषी ठहराया है और उचित समय सज़ा देंगे।

2:4 जो लोग सच्चाई पर नहीं चलते हैं, यह उदाहरण देकर पतरस सिद्ध करता है, कि परमेश्वर इस योग्य हैं कि सजा़ दें। उत्पत्ति 6:1-5; 16:7; आदि पर नोट्स। प्रका. 12:4,7,8 से तुलना करें। पुराने समय मैं स्वर्गदूतों ने परमेश्वर के खिलाफ़ बगावत की और वे वहाँ से बाहर निकाल दिए गए। इसलिए कि परमेश्वर ने उन्हें नहीं छोड़ा, झूठे शिक्षक भी बचेंगे नहीं।

"नरक"- इसे टार्टरस, यूनानी भाषा में कहा गया है जिसका मतलब है सज़ा की जगह।

"अन्धेरे की जंजीरों"- तुलना करे पद 17 और मत्ती 25:30 से।

"आखिरी फ़ैसले"- 1 कुरि. 6:2-3.

2:5 उत्पत्ति 6:5-8,11-13,18; 7:11-12,23.

"नूह और सात लोगों"- केवल इसी जगह नूह को संदेश देने वाला कहा गया है। वह खरा आदमी था (उत्पत्ति 6:9)। उसने अपने समय के लोगों को सही बातें सिखायी, लेकिन उन्हों ने सुनना नहीं चाहा कई सालों तक उसने चेतावनी दी लेकिन कोई व्यक्ति भी नहीं बदला। इसलिए कि आठ लोगों को छोड़कर कोई और नहीं बचा, हम जान सकते हैं, कि झूठी शिक्षा देने वाले बचेंगे नहीं।

2:6-8 यहूदा 7; मला. 4:1; मत्ती 4:10,12; 25:41.

2:7 "धर्मी लूत"- उत्पत्ति 18:23. इस पद से हम समझ सकते हैं कि लूत ने सृजनहार पर विश्वास किया था। परमेश्वर ने उसे खरा व्यक्ति कहकर ऐलान भी किया (तुलना करें उत्पत्ति 15:6) हालांकि बाईबल में इसका बयान कहीं नहीं है। सदोम में उसके जीवन के बारे में पतरस ज़रूर बताता है। वह बताता है कि एक मुक्ति पाए व्यक्ति के मन में उस समय क्या होता है जब वह दुनिया की बुराई देखता है।

देखता और सुनता था, उसकी वजह से बहुत पीड़ित था। 9तो यीशु जानते हैं कि मुक्ति पाए हुए व्यक्ति को परख के समय से कैसे छुड़ाया जाए और दुष्ट व्यक्ति को न्याय के दिन तक सज़ा दिए जाने के समय तक कैसे रखा जाए। 10खासकर जो अशुद्ध करने वाली चाह में लिपटे रहते हैं और अधिकार को तुच्छ जानते हैं। वे घमण्डी और ज़िद्दी हैं और इज़्ज़तदार स्वर्गदूतों के खिलाफ़ में बातें करने से पीछे नहीं हटते। 11हालांकि स्वर्गदूत अधिकार और शक्ति में अधिक बलवान होते हैं, फिर भी उन लोगों के खिलाफ़ में परमेश्वर के सामने गन्दे इल्ज़ाम नहीं लगाते।

12लेकिन ये लोग नासमझ जानवर की तरह हैं जो पकड़े जाने और नाश किए जाने के लिए पैदा हुए हैं, जिन बातों की समझ उन्हें नहीं है, ये लोग उसी की बुराई करते हैं, और वे अपने बर्बादी में ही मिट जाएँगे। 13इन्हें बुराई का बदला ज़रूर मिलेगा। वे दिन की रोशनी में मज़ा लेना चाहते है वे दाग और धब्बा हैं। वे तुम्हारे साथ खाना तो खाते हैं, लेकिन उन्हें अपने धोखे में ही पड़ा रहना अच्छा लगता है। 14उनकी आँखें व्यभिचार से भरी हुयी हैं और वे गुनाह करने से रूक नहीं सकते। वे चंचल मन वाले लोगों को फँसा लेते हैं। उनका मन लालच का आदी हो गया

2:9 जैसा कि पहले था अभी भी है, मनुष्य जाति दो भागों में बँटी है - अच्छे चरित्र वाली और दुष्ट। बाईबल में परमेश्वरीय या अच्छे चरित्र वाले वे हैं जो एक सच्चे परमेश्वर के प्रति समर्पित हैं। वह सच्चे प्रभु पर भरोसा करते और उनके कहे अनुसार जीते हैं। अधर्मी या दुष्ट इस प्रभु को नहीं मानते हैं (हालांकि मुँह से कह सकते हैं, कि विश्वास है) उनके जीवन इस बात के सबूत हैं कि वे नहीं करते हैं।

"छुड़ाया जाए"- 1 कुरि. 10:13; रोमि. 8:35-39.

"न्याय के दिन"- प्रे.काम 17:31.

"सज़ा दिए जाने"- हालांकि इन्साफ़ का आखिरी दिन नहीं आया है, दुष्ट जो मर चुके होंगे, दण्ड पाएँगे (लूका 16:22-25)

2:10 "अशुद्ध करने वाली"- मत्ती 15:19; रोमि. 1:24; इफ़ि. 4:19,22.

"चाह में लिपटे रहते हैं"- देखें रोमि. 7:5; 8:4-8.

"अधिकार को तुच्छ जानते हैं"- मतलब यह कि जो भी अपने अधिकार का इस्तेमाल करे, उसकी मानना ही नहीं चाहते। इसके साथ ही लालच और अनैतिक व्यवहार भी देखा गया है। इन तीनों के गिरफ़्त में इन्सान किसी को भी नहीं चाहता कि वह उसके ऊपर नियंत्रण रखे। इसलिए कि चाहे मनुष्य या परमेश्वर की मानने से वह अपनी दुष्टता जारी नहीं रख सकेगा। ऐसे लोग यीशु के अधिकार को तुच्छ समझते हैं। जितना अधिक वे अपनी भ्रष्ट इच्छाओं की सुनते हैं, और ज़्यादा वे घमण्डी और बेलगाम हो जाते हैं।

"इज़्ज़तदार"- स्वर्गिक प्राणी - ऐसे लोग अनदेखी दुनिया के बारे में अविश्वासी होते हैं। उनके लिए सब कुछ यही दुनिया है।

2:11 यहूदा 9 से मिलान करें।

2:12 इफ़ि. 4:18; यहूदा 10 वे इतने नम्र और दीन नहीं होते हैं कि मान लें कि उन्हें सब कुछ नहीं मालूम। घमण्ड में वे अलौकिक सच्चाइयों के खिलाफ़ बुरा कह डालते हैं।

"नासमझ"- भजन 49:12,20; 57:4; 74:19; ये लोग जानवरों की तरह होते हैं। देह की इच्छाओं को पूरा करना ही उनका मकसद होता है। वे वादविवाद करने के ज्ञान का दावा कर सकते हैं लेकिन बर्ताव ऐसा है कि कुछ भी नहीं जानते।

2:13 "बुराई का बदला"- गल. 6:7-8; 2 थिस्स. 1:6.

"दिन की"- अपनी भ्रष्ट इच्छाओं को पूरा करने के लिए उनको रात पूरी नहीं पड़ती है। वे बेशर्म होते हैं और अपने गुनाह को छिपाते नहीं।

"खाना...हैं"- प्रे.काम 2:42; यहूदा 12; 1 कुरि. 11:20-22 पर नोट्स

2:14 ऐसे लोग हर एक खूबसूरत महिला को बुरी नजर से देखते हैं और उसे चंगुल में फँसाने की कोशिश करते हैं। वे लगातार विचारों इच्छाओं और कामों में गुनाह करते हैं। तुलना करें मत्ती 5:28-30.

"लालच"- पद 3 वे निरे स्वार्थी है और दूसरों की परवाह नहीं करते हैं

है। वे शापित लोग हैं। वे सही रास्ते को छोड़कर गुमराह हो गए हैं। 15बओर के बेटे बिलाम, जिसने बेईमानी के लाभ से प्यार किया था, उन्हों ने उसी के रास्ते को अपना लिया है। 16बालाम से गधी ने इन्सान की जुबान में बोलकर उस के बलवापन के लिए उसे डाँटकर उसके पागलपन को रोकना चाहा था।

17ये लोग ऐसे कुओं के समान हैं, जो सूखे होते हैं। ऐसे बादल जिन्हें हवा उड़ा ले जाती है। उनके लिए अँधियारे का कालापन हमेशा के लिए आरक्षित है। 18जब वे बढ़ा-चढ़ा कर बेकार की बातें करते हैं, वे बड़ी बेशर्मी के साथ शरीर की इच्छा से उन लोगों को फँसा लेते हैं, जो इन बुराई में रहने वालों से बच निकले हैं। 19वे दूसरों को आज़ादी का वायदा करते हैं, लेकिन खुद गुनाह के गुलाम हैं। जिस बात से एक आदमी हार जाता है, वही उसको गुलामी में लाती है। 20इसलिए कि अगर वे मुक्तिदाता यीशु मसीह को जानने के बाद इस दुनिया की सड़ाहट से बच गए हैं, और वे फिर से उसमें फँसते हुए घिर जाते हैं, तो उनका अन्त उनकी शुरूआत से बदतर है। 21उनके लिए यह भला होता कि उन्हों ने धार्मिकता के रास्ते

"शापित"- 1 कुरि. 16:22; गल. 1:8-9; इब्रा. 6:8; उत्पत्ति 4:11; व्यव. 16:22; गल. 1:8-9; इब्रा. 6:8; उत्पत्ति 4:11; व्यव. 11:26-28; नीति. 3:33; यशा. 24:6.

2:15 "उसी के रास्ते को अपना लिया है"- 1 यूहन्ना 2:19.

2:16 गिनती 22:28-31.

"बालाम"- यहूदा 11. इस से सम्बन्धित 19 के नोट्स देखें। झूठे शिक्षक और भविष्यद्वक्ता किराए पर मिल जाते हैं। वे पैसों या दुनिया की चीजों के पीछे जाते हैं। वे वही सिखाते हैं जो लोग सुनना माँगते है।

"पागलपन"- यह किसी के लिए भी पागलपन है जो यह सोचता है कि वह अपनी नीयत और इरादों को छिपा सकता है और अपने रास्ते पर बना रह सकता है।

2:17 "कुओं"- 2 तीमु. 3:5 से तुलना करें। बाहर से वे आत्मिक दिखते हैं लेकिन भीतर से खोखले हैं। वे दावा करते हैं कि आत्मा से मरे हैं, लेकिन बिना आत्मा के हैं।

"सूखे"- पर देखें यूहन्ना 4:13-14; 7:38-39.

"ऐसे बादल..."- यहूदा 12. देखें इफ़ि. 4:14.

"अँधियारे"- इस दुनिया में वे धरती के कालेपन को चुनते हैं (यूहन्ना 3:19-20); हमेशा के लिए उनके पास अँधियारा ही होगा (मत्ती 8:12; 22:13; यहूदा 13)

2:18 "बढ़ा-चढ़ा कर"- दुष्ट लोग प्रायः डींगे मारते हैं - भजन 52:1; 75:4; 94:4; रोमि. 1:30; गल. 6:13; 2 तीमु. 3:2 याकूब 3:5. जिन्हें घमण्ड करना ही नहीं चाहिए, वे ही ज़्यादा घमण्ड करते हैं।

"बच निकले हैं"- ये दुष्ट शिक्षक उन लोगों को अपने वश में करना चाहते हैं जो यीशु के विषय में दिलचस्पी दिखाते हैं। या उनको जो मसीह के नए शिष्य हैं।

2:19 "आज़ादी का वायदा"- जिस मात्र आज़ादी को वे जानते हैं, वह बुरे स्वभाव की इच्छाओं को पूरा करने की आज़ादी है। वे परमेश्वरीय कृपा का गलत अर्थ बतलाते हैं और यह कि मसीही गुनाह करते रह सकते हैं और फिर भी उद्धार उनका ही है (यहूदा 4; गल. 5:13)। वे परमेश्वरीय वचन की शिक्षा को अनदेखा करते हैं - 1 कुरि. 6:9-10; गल. 5:21,24.

"गुलामी"- यूहन्ना 8:34-35; रोमि. 6:16. वासना के गुलाम दूसरों से आज़ादी की बात करते हैं - ऐसी आज़ादी जो गुलाम बनाती है।

2:20 "बच गए हैं"- इन लोगों के पास मसीह के बारे में जानकारी हो सकती है - यहूदा की तरह वे यीशु को जानते भी होंगे। शब्द 'यदि' देखें और इब्रा. 6:4-6; 10:26-27 से तुलना करें। लोग यीशु के बारे में काफ़ी कुछ जानते हुए नयी शुरूवात भी करते होंगे। इसका अर्थ यह नहीं कि उन्हें नया आत्मिक जीवन और पवित्र आत्मा द्वारा नया स्वभाव मिल गया।

"अन्त...है"- तुलना करें मत्ती 12:43-45.

2:21 यीशु का रास्ता सच्चाई और खरेपन का है (2:2,15; मत्ती 5:20; 7:13-14; यशा. 35:8; भजन 15:1-5)। इस रास्ते को जान लेना और इस से पीछे हटना संभव है।

को जाना ही नहीं होता, बजाए इसके कि पवित्र आज्ञा को जानने के बाद उससे मुड़ जाएँ। 22लेकिन वे एक सच्ची कहावत के जैसे हैं: "कुत्ता अपनी उल्टी को फिर चाटता है और धुला-धुलाया सूअर फिर से कीचड़ में जाता है।"

3 प्यारे दोस्तो, मैं तुम्हें यह दूसरी चिट्ठी लिख रहा हूँ। मैं याद दिलाने के लिए तुम्हारे शुद्ध मनों को उभार रहा हूँ, 2ताकि हम प्रेरितों से मुक्तिदाता यीशु द्वारा दी गयी आज्ञा और पवित्र भविष्यद्वक्ताओं द्वारा पहले से दिए गए वचनों को तुम याद करो।

3सब से पहले तुम यह जान लो, कि आखिरी दिनों में ठट्ठा करने वाले अपनी चाह के आधार पर जीवन जीने वाले होंगे। 4और ऐसा बोलने वाले आएँगे कि यीशु के आने का वायदा कहाँ है? क्योंकि जब से हमारे पूर्वज मर गए, सभी बातें वैसी ही हैं, जैसी दुनिया के शुरूआत से हैं? 5वे जान-बूझकर इस सच्चाई का इंकार करेंगे कि आसमान की रचना बहुत पहले सृष्टिकर्ता के कहने से हुयी थी। यह भी कि ज़मीन जल में से निकली और जल ही में स्थिर है। 6उस समय की दुनिया पानी से ढँक गयी थी और बर्बाद हो गयी थी। 7लेकिन उसी परमेश्वर के वचन से वर्तमान के आसमान और ज़मीन, आग से बर्बाद किए जाने के लिए रखे गए हैं, जब तक इन्साफ़ का दिन और बुरे लोगों की

"पवित्र आज्ञा"- मत्ती 4:17,19; मरकुस 1:15; लूका 24:47; प्रे.काम 17:30. यीशु का सुसमाचार लोगों के लिए पवित्र आज्ञा की तरह है।

2:22 पहला नीतिवचन नीति. 26:11 में है लेकिन दूसरे कहावत का स्त्रोत नहीं पता है। सच्चे विश्वासी भेड़ें हैं (यूहन्ना 10:27) कुत्ते और सुअर नहीं। भेड़ न तो "उल्टी" या "कै" खाती है न ही कीचड़ में लोटती है। यह संभव है कि यीशु के लोग गुनाह में गिर जाएँ (याकूब 3:2; 1 यूहन्ना 2:1; गल. 2:11-13; 5:17) लेकिन वे उसमें पड़े नहीं रहते हैं (नीति. 24:16; 1 यूहन्ना 3:9)। पतरस ऐसे लोगों की सही तस्वीर देता है जो किसी वजह से धार्मिक बन जाते हैं। वे कुछ समय के लिए पुरानी बुराईयों को छोड़ देते हैं। लेकिन बहुत जल्दी उनका असली रूप बाहर आ जाता है और वे पुरानी बुराई में फँस जाते हैं। एक नहलाया गया सुअर, सुअर ही रहेगा, बदलेगा नहीं।

3:1 "याद दिलाने"- 1:12-15.

3:2 "आज्ञा"- 2:21 वह पुराने और नए नियम के महत्व को बतलाता है ताकि विश्वासी उन्नति करें।

"भविष्यद्वक्ताओं"- 1:19-21.

3:3 "ठट्ठा करने वाले"- 2:12; 2 इति. 36:16; भजन 1:1; भजन 73:8; 74:22; नीति. 14:9; 15:12; 19:29; 21:24; यशा. 28:14; प्रे.काम 13:41; यहूदा 18. कुछ लोग मसीही मत के ठोस आधार की हँसी उड़ाते हैं। सत्य की परख करने और बुरी इच्छाओं को छोड़ने के बजाए मज़ाक में उड़ाना आसान बात है।

3:4 "यीशु के आने"- मत्ती 24:3,30; यूहन्ना 14:3. ये हँसी करने वाले ये मानकर चलते हैं कि यीशु मसीह अभी तक तो आए नहीं इसलिए कभी नहीं आएँगे।

3:5 "जान-बूझकर"- वे अपनी इच्छाओं के अनुसार ही करना चाहेंगे और नहीं चाहेंगे कि कोई और बात दखल दे। उनका विश्वास सत्य पर नहीं, लेकिन जो वह चाहते हैं, उस पर होता है। तुलना करें रोमि. 1:28. ईश्वरीय सच्चाई के बारे में उनकी अज्ञानता और अविश्वास जान-बूझकर है।

"सृष्टिकर्ता के कहने"- उत्पत्ति 1:1-3,6,9 और भजन 33:6

3:6 देखें 2:5.

3:7 "आग"- पद 12; यशा. 66:15-16; नहूम 1:5-6; मला. 4:1; प्रका. 20:9. आग से आकाश और पृथ्वी कब नाश किए जाएँगे? अविश्वासियों के न्याय के समय, उस से पहले नहीं (देखें प्रका. 20:11-15) तुलना करें मत्ती 19:28; प्रे.काम 3:21; रोमि. 8:19-21.

बर्बादी का वक्त न आ जाए।

8लेकिन प्यारे भाइयो-बहनो, इस बात से अनजान न रहो कि यीशु के लिए एक दिन, हज़ार साल के बराबर है और हज़ार साल एक दिन की तरह हैं। 9परमेश्वर अपने वायदों को पूरा करने में धीमे नहीं हैं, जैसा कि कुछ लोग समझते हैं। लेकिन वह हमारे लिए धीरज रखने वाले हैं, क्योंकि वह नहीं चाहते कि कोई इन्सान बर्बाद हो, लेकिन यह कि सभी का मन बदल जाए।

10लेकिन परमेश्वर का दिन रात में चुपके से आने वाले चोर के आने की तरह होगा। उस दिन आसमान एक बड़ी आवाज़ के साथ गायब हो जाएगा और बड़ी गर्माहट के साथ ही सभी चीजें पिघल जाएँगी। दुनिया और इस पर के सभी काम जल जाएँगे। 11जब ये सभी वस्तुएँ इस तरह पिघलने वाली हैं, तुम लोगों को चाल-चलन और खरे जीवन में कैसे लोग होना चाहिए? 12तुम प्रभु के दिन का इन्तज़ार करते और यीशु के जल्दी आने का इन्तज़ार करते हो, जब आसमान और इसके सभी तारे जलते हुए बर्बाद हो जाएँगे। 13लेकिन हम उनके वायदों के अनुसार एक नए आसमान और नयी पृथ्वी का इन्तज़ार कर रहे हैं, जहाँ केवल ईमानदारी, सच्चाई, इन्साफ़ और नैतिकता ही रहेगी।

14प्यारे दोस्तो जब कि तुम इन सब

3:8-9 लोगों को ऐसा लगता है कि बहुत समय हो चुका है, यीशु आए नहीं जिस तरह हम समय को आँकते हैं, परमेश्वर नहीं करते है उनके लिए यह 2 दिन या उस से कम भी हो सकता है। देखें भजन 90:4 और नोट्स भी। यदि 2000 साल या ज़्यादा हो जाते हैं यीशु को आने में, तो उनके पास एक अच्छा उद्देश्य ही होगा। वह इस काम में लगे हैं कि लोग मुक्ति पाएँ। तुलना करें उत्पत्ति 6:3.

3:9 "कोई भी इन्सान बर्बाद हो"- यहेज. 18:32; 1 तीमु. 2:4; यूहन्ना 3:16. यह परमेश्वर की कामना है कि हर इन्सान मन बदले - प्रे.काम 17:30 मन बदलाव पर नोट्स मत्ती 3:2 में देखें।

3:10 "प्रभु का दिन"- यशा. 2:12; 13:6-13; योएल 2:1-2,30,31; सप. 1:14-18; प्रे.काम 2:20; 1 थिस्स. 5:2; 2 थिस्स. 2:2. बाईबल में "दिन" - का शाब्दिक अर्थ हमेशा नहीं है देखें उत्पत्ति 2:4; यूहन्ना 9:4; यशा. 34:8; 1 थिस्स. 5:5-8. मुक्ति का दिन (2 कुरि. 6:2) पौलुस के समय से आज तक (2000 साल) रहा है। प्रभु के दिन की आवाज़ 1000 या उस से ज़्यादा, यहाँ तक कि यीशु के वापस आने अन्तिम न्याय (प्रका. 20:11-15) तक भी हो सकती है।

"चोर के आने की तरह"- 1 थिस्स. 5:1-3; प्रका. 3:3; 16:15.

"गर्माहट"- पद 7 पतरस भविष्य की घटनाओं की रूपरेखा नहीं दे रहा था। उसकी भाषा मी इस संभावना को नकार नहीं देती कि यीशु अन्तिम न्याय और आसमान जमीन के नाश किए जाने से पहले एक हजार साल शासन करेंगे (प्रका. 20:1-6)। उस हजार साल के पहले और बाद में भयंकर दण्ड आएगा - 2 थिस्स. 1:7; यशा. 24:6-13; 29:6; 30:30; प्रका. 16:8-9; 20:9,14,15.

3:11 "कैसे लोग"- क्या इस में कोई समझदारी है कि नाश होने वाली चीजों के लिए जिया जाए? तुलना करें 1 यूहन्ना 2:15-17.

3:12 "प्रभु के दिन"- पद 10; 1 कुरि. 1:8; 3:13; 5:5; 2 कुरि. 1:14; फ़िलि. 1:6 यीशु के आने को विश्वासी जल्दी कैसे कर सकते हैं। वह करने के द्वारा, जो हमको करने के लिए कहा गया है। हमें प्रार्थना करना है (मत्ती 6:10) और सभी लोगों तक संदेश पहुँचाने में मदद करनी है मत्ती 28:19; मरकुस 16:15 जब चर्च इसको पूरा कर सकेगा, अन्त आ जाएगा (मत्ती 24:14)

3:13 नया आकाश, नयी पृथ्वी - यशा. 65:17; प्रका. 21:1.

"नैतिकता ही रहेगी"- प्रका. 21:27; 22:14-15; भजन 15:1-5; 89:14; 118:19; यशा. 11:4-5; 1 कुरि. 6:9-10. वह सब इस दुनिया से फ़र्क होगा, जहाँ ईमानदारी की ज़िन्दगी और ईश्वरीय चालचलन को तुच्छ समझा जाता है और लोगों को सताया जाता है इफ़ि. 1:4; 4:3; 5:27; फ़िलि. 1:10; 2:15; 1 थिस्स. 5:23; इब्रा. 12:14. यदि हम वैसा जीवन जीएँ, जैसा वह चाहते हैं, तो हम उनके आने का खुशी और विश्वास से इन्तज़ार कर सकेंगे।

बातों के इन्तज़ार में हो, प्रयत्न करो कि आपस में मेल जोल से रहते हुए और बेदाग और निर्दोष हालत में पाए जाओ।
15यह भी जानो कि हमारे प्रभु का धीरज ही हमारे लिए कल्याणकारी और सुरक्षा है, जैसा कि हमारे प्यारे भाई पौलुस ने प्राप्त हुए ज्ञान के आधार पर तुम्हें लिखा है। 16जैसा कि उसकी सभी चिट्ठियों में ये सभी बातें लिखी हैं, उन में कुछ समझने में कठिन हैं। जो लोग ना समझ हैं और डावाँडोल होते हैं, इन बातों को उसी तरह से तोड़-मरोड़ देते हैं जैसे वे अपने नुकसान के लिए पवित्र वचन के साथ करते हैं।

17हे भाइयो-बहनो, क्योंकि तुम पहले से इन सभी बातों को जानते हो, इसलिए सावधान रहो कहीं दुष्ट की दुष्टता के कारण गुमराह होकर सच्चाई से सरक न जाओ।
18लेकिन हमारे मुक्तिदाता यीशु मसीह की असीम कृपा और उनकी पहचान में बढ़ते जाओ। उन्हीं की बड़ाई अब से लेकर सदा तक होती रहे।

3:15 "धीरज"- पद 9

"पौलुस"- रोमि. 2:4; 3:25-26; 9:22-23; 10:21 में उसने ईश्वरीय धीरज की बात कही थी। पतरस शायद पौलुस के उसे खत की तरफ़ इशारा कर रहा था।

3:16 "समझने में कठिन"- पौलुस की कुछ चिट्ठियों में कुछ मुश्किल बातें और भाषा है। (उदाहरण के लिए रोमियों की पुस्तक के कुछ अंश)। बिना अध्ययन और ईश्वरीय ज्ञान और पवित्र आत्मा की समझ, हम ज्यादा समझ नहीं सकते।

"डावाँडोल"- 2:14; याकूब 1:8 - सत्य में अय्यूब नहीं (कुल. 1:23; 4:12; 1 थिस्स. 3:8; 2 थिस्स. 2:15; 1 पतर. 5:9-10)।

"तोड़-मरोड़"- प्रे.काम 20:30; 2 कुरि. 4:2; गल. 1:7; यिर्म. 23:36. किस तरह से पौलुस द्वारा लिखी (बाईबल की दूसरी भी) बातों के साथ लोगों ने (कभी 2 शिक्षित लोगों ने) खिलवाड़ किया।

"अपने नुकसान"- 2:1,3; 2 थिस्स. 2:10. ईश्वरीय ज्ञान का हम कैसे इस्तेमाल करते हैं, यह ज़रूरी है जानना। यदि हम प्रभु की बातों को तोड़ें, मरोड़ें और मनमानी करेंगे, दोषी ठहरेंगे।

"पवित्र वचन"- ध्यान दें पतरस पौलुस द्वारा लिखी बातों को ईश्वरीय वचन का दर्जा दे रहा है (पतरस ने उन बातों को पवित्र आत्मा प्रेरित स्वीकार किया 1:20-21)।

3:17 "सावधान रहो"- मत्ती 10:17; 16:6; मरकुस 13:9,23,33; प्रे.काम 20:31; 1 कुरि. 16:13.

"दुष्टता"- "बिना किसी नियंत्रण" - 2:7-8; 2 थिस्स. 2:3,7-9; 1 यूहन्ना 3:4; यहूदा 4; 1 कुरि. 9:21; याकूब 2:8

"सरक"- 1:10; 1 कुरि. 10:12.

3:18 "कृपा"- तीतुस 2:11-14 में देखें कि कृपा क्या सिखाती है और हमें किस बात में बढ़ना है। यह मसीह की कृपा है। इस में बढ़ने का मतलब है मसीह की तरह होते जाना।

"पहचान"- इफ़ि. 1:17; 3:18-19; फ़िलि. 3:10; कुल. 1:9; 2:2. मसीह को और अच्छी तरह जानने का मतलब है और ज़्यादा उनकी तरह होना हर यीशु के जन का यही लक्ष्य होना चाहिए।

"बढ़ते"- इफ़ि. 4:12-15; 1 पतर. 2:2.

"उन्हीं की बड़ाई"- पतरस जानता है कि सारा श्रेय मसीह का है। सिर्फ़ परमेश्वर ही इस लायक हैं। यशा. 42:8; रोमि. 11:36; 16:27. मसीह इस लायक इसलिए हैं क्योंकि वह देहधारी परमेश्वर हैं।